Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

ज्ञान प्राप्ति के मुख्य साधनों का शैक्षिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन

डॉ. राजेश सिंह
राजा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड
Email: rajeshsingh6148@gmail.com

सारांश

ज्ञान मानव जीवन का एक केंद्रीय तत्त्व है, जिसके माध्यम से व्यक्ति यथार्थ को समझता है। ज्ञान को मुख्यतः तीन प्रकारों में विभाजित किया जाता है—अप्रत्यक्ष ज्ञान, स्थानीय ज्ञान और सार्वभौमिक ज्ञान। अप्रत्यक्ष ज्ञान वह है जो प्रत्यक्ष अनुभव से परे होता है, जैसे आत्मा या स्वर्ग-नरक की अवधारणाएँ। स्थानीय ज्ञान किसी विशेष क्षेत्र तक सीमित होता है, जबकि सार्वभौमिक ज्ञान सभी स्थानों पर समान रूप से सत्य होता है, जैसे जल का बर्फ या भाप में परिवर्तन।

ज्ञान की प्रकृति का संबंध यथार्थ से है, अर्थात् ज्ञान वही है जो वस्तु को उसके वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत करे। जब ज्ञान वास्तविकता को सही रूप में प्रतिबिंबित करता है, तब वह सत्य माना जाता है। भारतीय दार्शनिक परंपरा के अनुसार, ज्ञान प्रकृति का एक श्रेष्ठ विकार है और यह सत्त्वगुण से प्रभावित होता है, जबकि तमोगुण के प्रभाव में अज्ञान उत्पन्न होता है। ज्ञान मनुष्य में चेतना, विवेक और नैतिकता का विकास करता है।

ज्ञान की प्रमाणिकता के तीन प्रमुख सिद्धांत हैं—संवाद सिद्धांत, संगति सिद्धांत और व्यवहारवादी सिद्धांत। संवाद सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान तभी सत्य है जब वह वस्तुस्थिति से मेल खाता हो। संगति सिद्धांत ज्ञान की आंतरिक एकरूपता और पूर्व स्थापित सत्यों से सामंजस्य पर बल देता है। व्यवहारवादी सिद्धांत के अनुसार, वही ज्ञान सत्य है जो व्यावहारिक जीवन में उपयोगी और लाभकारी सिद्ध हो।

Keywords :- ज्ञान, अप्रत्यक्ष ज्ञान, स्थानीय ज्ञान, सार्वभौमिक ज्ञान, यथार्थ, प्रमाणिकता, संवाद सिद्धांत,

प्रस्तावना

अप्रत्यक्ष ज्ञान से तात्पर्य उस ज्ञान से है जिसे हम अन्य माध्यमों से प्राप्त करते हैं। अप्रत्यक्ष ज्ञान को इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष अनुभूति नहीं किया जा सकता है। जैसे—आत्मा अजर-अमर है, स्वर्ग में सुख है, नरक में दुःख है।

स्थानीय ज्ञान से तात्पर्य उस ज्ञान से है जो स्थान अर्थात् क्षेत्र विशेष से ही संबंधित होता है। उदाहरण के लिए—जैसे सभी कुओं का पानी खारा होता है। यह स्थानीय ज्ञान है, क्योंकि यह ज्ञान हर जगह के कुओं पर लागू नहीं होता।

सार्वभौमिक ज्ञान से तात्पर्य उस ज्ञान से है जो क्षेत्र विशेष से संबंधित न होकर, पूरे संसार से संबंधित होता है। उदाहरण के लिए—जैसे पानी को जमाने पर बर्फ बनती है, पानी को उबालने से पानी भाप में परिवर्तित हो जाता है। यह ज्ञान सार्वभौमिक ज्ञान है, क्योंकि यह संसार के सभी क्षेत्रों के लिए सत्य है।

Author:- Rajesh Singh
Email:- rajeshsingh6148@gmail.com
Received:- 04 December , 2025
Accepted:- 21 March, 2026.
Available online:- 30 March, 2026
Published by JSSCES, Bareilly
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 International License

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

ज्ञान की प्रकृति

ज्ञान की प्रकृति का प्रत्यक्ष संबंध यथार्थ से है। ज्ञान के द्वारा वस्तु के उस यथार्थ स्वरूप को जाना जाता है, जिस स्वरूप में वह है। अतः ज्ञान उसी सीमा तक यथार्थ रूप में होगा, जिस सीमा तक वह उस वस्तु को उसी रूप में प्रस्तुत करता है, जिस रूप में वह वस्तु जानी जाती है। यदि ज्ञान के प्रकाश में हम उस वस्तु के दर्शन नहीं कर पाते, तो यह माना जाता है कि वह इस प्रकार की है, यद्यपि वास्तव में उसका स्वरूप कुछ और ही होता है।

इसे एक उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं—"संसार यथार्थ रूप में मिथ्या है और ब्रह्म सत्य है।" ज्ञान के द्वारा ज्ञान के अभाव में हम उक्त स्वरूप को न समझकर यह मानते हैं कि संसार सत्य है और ईश्वर मिथ्या है। यह हमारा प्रतीत होने वाला स्वरूप होता है, जबकि यथार्थ रूप में तो संसार असत्य है और ईश्वर सत्य है। अतः ज्ञान की प्रकृति यथार्थ में विश्वास तथा यथार्थता के लिए उचित प्रमाण में निहित है।

संसार का विकास पुरुष एवं प्रकृति के परस्पर सहयोग से होता है, लेकिन उसमें पुरुष सदैव ही निष्क्रिय एवं उदासीन रहता है तथा एक मूकदर्शक के रूप में कार्य करता है। संसार में जितने विकास एवं परिवर्तन होते हैं, वे सभी प्रकृति द्वारा ही संभव होते हैं। जीव की उत्पत्ति प्रकृति की ही देन है। ज्ञान प्रकृति का सर्वोत्तम विकार है, इसी कारण इसे महत्व दिया जाता है।

ज्ञान का रूप अत्यंत बड़ा एवं प्रकाशपूर्ण है, क्योंकि इसी के माध्यम से मनुष्य में व्याप्त मनोवैज्ञानिक दशाओं का संपूर्ण चित्रण होता है और इस विशेषता अर्थात् ज्ञान का वास सभी जीवों में होता है। इसी गुण के द्वारा ही एक ज्ञाता एवं श्रेष्ठ के मध्य के अंतर को ज्ञात किया जा सकता है।

ईश्वरीय प्रदत्त जगत में व्याप्त किसी भी पदार्थ के रूप को देखकर विचारों का उद्भव होता है। बौद्धिकता या ज्ञान का निर्माण सत्त्वगुण के अत्यधिक प्रभाव से होता है। मनुष्य में जो ज्ञान, धर्म और वैराग्य की भावना विकसित होती है, वह बुद्धि में सत्य की प्रधानता के कारण होती है।

ज्ञान के द्वारा ही व्यक्ति में चेतना का प्रकाश उत्पन्न होता है। ज्ञान प्रकृति प्रदत्त है। व्यक्ति में ज्ञान स्वरूप सत्त्वगुण पर निर्भर होता है और जब तमोगुण की प्रधानता हो जाती है, तब ज्ञान का स्वरूप तामसिक हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य में अज्ञानता, आसक्ति, अधर्म एवं अन्य प्रकार के भावों का प्रादुर्भाव होता है।

संक्षिप्त रूप में, ज्ञान की प्रकृति निम्नलिखित है—

1. ज्ञान में शक्ति है, ताकत है।
2. ज्ञान कभी भी समाप्त नहीं होता।
3. ज्ञान सत्य तक पहुँचने का साधन है।
4. ज्ञान धन की तरह है, जितना एक मनुष्य को प्राप्त होता है, वह उतना ही ज्यादा पाने की इच्छा करता है।
5. ज्ञान प्रेम तथा मानव स्वतंत्रता के सिद्धांतों का ही आधार है।
6. ज्ञान क्रमबद्ध बढ़ता रहता है, एकदम अचानक से नहीं मिल जाता।
7. ज्ञान की पुष्टि की जा सकती है।
8. ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती।
9. ज्ञान सुनिश्चित है।
10. तथ्य तथा मूल्य ज्ञान के आधार माने जाते हैं।
11. शब्दों के अर्थ, शर्तें, विचार ज्ञान के आधार के रूप में कार्य करते हैं।
12. सूचना ज्ञान का स्रोत है।
13. धर्म की भांति ज्ञान को जानने के लिए अनुभव करना चाहिए।

ज्ञान के मुख्य सिद्धांत

ज्ञान की प्रमाणिकता से तात्पर्य ज्ञान की सत्यता से है। किसी भी विधि अथवा स्रोत से प्राप्त ज्ञान अपने आप में सत्य है अथवा नहीं, जब तक उसकी प्रमाणिकता अथवा सत्यता सिद्ध न की जाए, तब

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

तक उसे ज्ञान के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। ज्ञान की सत्यता (प्रमाणिकता) के संबंध में दार्शनिकों द्वारा तीन सिद्धांतों का निर्माण किया गया है, जो कि निम्नलिखित हैं—

1- संवाद सिद्धांत

यह सिद्धांत आपसी संवाद (सुसंगति) को स्वीकार करता है। इसकी मान्यता है कि विचार और उस वस्तु के आपसी संबंध से सत्य को जाना जा सकता है। अर्थात् तथ्य और कथन में समानता होनी चाहिए, उसमें किसी प्रकार का भेद अथवा अंतर नहीं होना चाहिए। ऐसी स्थिति में प्राप्त ज्ञान सत्य (प्रमाणिक) ज्ञान कहलाता है।

परंतु इस ज्ञान के सत्यापन हेतु दो बातों का होना आवश्यक है—
पहला—तथ्य वास्तविक हो और स्वतंत्र रूप से स्थित हो।
दूसरा—अनुभव द्वारा उस तथ्य का सत्यापन किया जा सके।

यथार्थवाद यह मानता है कि ज्ञान और ज्ञान की वस्तु का संबंध बाह्य होता है, इसलिए तथ्य प्रस्तुत किए जाते हैं, जबकि आदर्शवाद की मान्यता है कि इनका संबंध आंतरिक होता है, इसलिए यह दोनों में एकत्व स्वीकार करता है। अतः कहा जा सकता है कि यह सिद्धांत ज्ञान की प्रमाणिकता के लिए तथ्य को मुख्य आधार मानता है और यह मानता है कि कथन को प्रमाणिक (सत्य) सिद्ध करने के लिए तथ्य के साथ संवाद अथवा सादृश्यता होनी चाहिए।

2- संगति (सम्बद्धता) सिद्धांत

यह सिद्धांत ज्ञान की सत्यता (प्रमाणिकता) जानने के लिए उसकी आत्म-संगति, उसके संगठन और एकरूपता में होने पर बल देता है। यह मानता है कि तथ्यों के संबंध में हमारे दो कथन होते हैं—इनमें एक कथन सत्य है, पूर्व सिद्ध है और दूसरा कथन नया है। अतः तथ्यों में जो कथन नया है, उसे दूसरे सत्य कथन से संगति (सम्बद्धता) रखनी चाहिए, अर्थात् निर्धारित सत्य कथन से उसका मेल खाना चाहिए। इस सिद्धांत में यह स्वीकार किया जाता है कि मनुष्य के सामने उसके सभी विचार सत्य प्रणाली के रूप में होते हैं, जिन्हें वह पहले से सत्य मान चुका होता है अथवा उनकी सत्यता पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुकी होती है। अतः कोई नया कथन आने पर हम उसे पूर्व सिद्ध कथन से उसका सत्यापन (परीक्षण) करते हैं, उसका संबंध जोड़ते हैं। इस प्रकार ज्ञान की सत्यता उसकी आत्म-संगति में होती है, उसके संगठन में होती है और उसकी एकरूपता में होती है।

3-व्यवहारवादी सिद्धांत

व्यवहारवादी विचारक सत्य को परिवर्तनशील मानते हैं। उसका संबंध व्यावहारिक जीवन से जोड़ते हैं और जीवन के लिए उसे उपयोगी मानते हैं। इनकी दृष्टि में सत्य परिवर्तनशील है, जो देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। इनकी मान्यता है कि वह ज्ञान सत्य है जो व्यावहारिक जीवन से संबंधित है और उसके लिए उपयोगी है।

निष्कर्ष

"सत्य वह है जो सफल है" (Truth is that which works – William James)। अतः जो कथन परिणाम की दृष्टि से जीवन में उपयोगी है, लाभ देने वाला है और सुख प्रदान करने वाला है, वह कथन सत्य है। और जो कथन जीवन को दुःखमय बनाए, लाभ के स्थान पर हानि पहुँचाए, वह असत्य है। इन्होंने सत्यता के आधारों में उपयोगिता, सुख, संतोष, कार्यशीलता एवं लाभ को स्वीकार किया है। उपरोक्त तीनों सिद्धांतों को ऊपर से देखने-समझने पर वे एक-दूसरे के विरोधी दिखाई देते हैं, परंतु वास्तविकता में वे एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं हैं।

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

वास्तव में पूर्ण तो इस संसार में कोई भी नहीं है। अतः ज्ञान की प्रमाणिकता (सत्यता) इस आधार पर आंकी जानी चाहिए कि वह मनुष्य के जीवन में उपयोगी हो, मनुष्य के लिए सार्थक हो तथा अनुकूल हो। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सत्य वही है जो तथ्यों के अनुरूप हो।

संदर्भ सूची

1. राधाकृष्णन, स. (2012). भारतीय दर्शन (भाग-1). नई दिल्ली: राजपाल एंड संस।
2. चंद्रधर शर्मा, च. (2011). भारतीय दर्शन: आलोचनात्मक अध्ययन. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. दत्त, म., & हीरियन्ना, म. (2008). भारतीय दर्शन की रूपरेखा. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. शर्मा, रा. न. (2015). दार्शनिक विचारधाराएँ. मेरठ: रस्तोगी पब्लिकेशन्स।
5. सिन्हा, ज. न. (2009). भारतीय दर्शन का इतिहास. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
6. तिवारी, क. न. (2014). तत्त्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।
7. मिश्र, उ. (2010). भारतीय दर्शन के मूल तत्त्व. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
8. विलियम जेम्स, वि. (2005). प्रैग्मेटिज़्म (अनुवादित). नई दिल्ली: पियरसन।
9. हॉस्पर्स, ज. (2013). दार्शनिक विश्लेषण का परिचय. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. नागार्जुन, न. (2007). माध्यमिक कारिका (अनुवाद सहित). वाराणसी: चौखंबा संस्कृत सीरीज।